RESEARCH REVIEW JOURNALS
Volume-04
Issue-03
March-2019

ISSN: 2455-3085 (Online)
RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
www.rrjournals.com[UGC Listed Journal]

ई.एच. कार का इतिहास लेखन

संगीता

इतिहास प्रवक्ता, रा.व.मा.वि., गुजरानी, जिला भिवानी

ARTICLE DETAILS

Article History
Published Online: 13 March2019

मुख्य शब्द : मानव जीवन, दृष्टिकोण, ई. एच.कार, ऐतिहासिक, बाबर, व्याख्यात्मक

ABSTRACT

ऐतिहासिक घटनाओं के पीछे मानवीय मस्तिष्क की भूमिका निर्णायक रही है। इतिहासकार द्वारा इन घटनाओं के अन्तःस्थल में प्रवेश कर क्रिया–क्लापों के परिवेश में मानवीय मस्तिष्क को समझना ही इतिहास है। मानवीय क्रिया–क्लापों को प्रत्येक इतिहासकार ने अपने–अपने दृष्टिकोण से समझने का प्रयास किया है, जिस कारण इतिहास का अध्ययन विस्तृत और व्यापक हो गया है। अनेक इतिहासकारों ने इतिहास की व्याख्या अपने–अपने ढंग से की है। इन में क्रॉन्चे, कॉम्टे, कोलिंगवुड, कार्ल–मार्क्स, मेक्स–बेबर, टायनबी और ई.एच. कार आदि का नाम लिया जा सकता है। ई.एच. कार के अनुसार इतिहास "इतिहासकार तथा तथ्यों की अन्तःक्रिया" पर आधारित हैं। अतः कार महोदय इतिहास लेखन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखते हैं।

भूमिका :

ई.एच. कार का पूरा नाम एडवर्ड हैलेट कार था। उनका जन्म 1892 ई. में लन्दन में हुआ था। इन्होंने मर्चेन्ट टेलर्स स्कूल, लन्दन और ट्रिनिटी कॉलेज कैम्ब्रिज में शिक्षा प्राप्त की। उच्च शिक्षा समाप्ति के पश्चात् 1916 से 1936 ई. तक ब्रिटिश विदेश विभाग में कार्य किया। 1936 ई. में विदेश विभाग से त्याग–पत्र देकर यूनिवर्सिटी कॉलेज ऑफ वेल्स के अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति विभाग में 'विल्सन प्रोफेसर' का पद ग्रहण किया।

ई.एच. कार ने 1941 ई. से 1946 ई. तक 'दि टाइम्स' के सहायक सम्पादक के रूप में कार्य किया। 1953–1955 ई. में डैलियल कॉलेज ऑक्सफोर्ड में राजनीतिक शास्त्र विभाग में ट्यूटर रहे।

इतिहास और ऐतिहासिक व्याख्या :

सर्वप्रथम हिस्ट्री शब्द का प्रयोग करने वाला व्यक्ति इतिहास का जनक हेरोटोटस था।[1] इतिहास शब्द से उसका अभिप्राय खोज तथा अनुसंधान था। इतिहास शब्द का सामान्य अर्थ मानव जीवन की अतीत की घटनाओं से लिया जाता है। जो व्यक्ति घटित घटनाओं का संकलन करता है, उसे इतिहासकार कहा जाता है।

चार्ल्स पर्थ ने लिखा है कि "इतिहास को परिभाषित करना सरल नहीं है।"[2] ई.एच. कार इतिहास क्या है? प्रश्न का उत्तर देते हुए लिखते हैं कि, "इतिहास, इतिहासकार तथा उसके तथ्यों के बीच लगातार होने वाली अन्तःक्रिया की एक प्रक्रिया है तथा अतीत और वर्तमान के बीच कभी न खत्म होने वाला परिसम्वाद है। ई.एच. कार ने अपनी पुस्तक "What is Hitosy" में इतिहास के विषय में विचार व्यक्त किए हैं। यह पुस्तक उनकी 1961 की ट्रेवेलान भाषणमाला का पुस्तक रूप है। इस पुस्तक में उन्होंने इतिहासकार और उसके तथ्य, समाज और व्यक्ति, इतिहास, विज्ञान और नैतिकता, इतिहास में कार्य–कारण संबंध आदि विषयों पर अपने विचार व्यक्त किए हैं।[3]

इतिहासकार तथा उसके तथ्य

ई.एच. कार के अनुसार तथ्य तथा इतिहासकार एक दूसरे के लिए आवश्यक होते हैं। तथ्यों से विहीन इतिहासकार व्यर्थ और बिना जड़ का होता है। इतिहासकार के अभाव में ऐतिहासिक तथ्य निर्जीव तथा अर्थहीन होते हैं। दोनों का संबंध मछली और पानी की भांति होता है। उन दोनों का संबंध उतना ही घनिष्ट होता है जितना मनुष्य और वातावरण का। ऐतिहासिक तथ्यों का संबंध अतीत से रहता है और इतिहासकार का संबंध वर्तमान से।[4]

ऐतिहासिक तथ्य क्या है? ई.एच. कार के अनुसार यह एक महत्वपूर्ण प्रश्न है जिस पर हमें थोड़ा और बारीकी से विचार करना चाहिए। 'सामान्य ज्ञान' दृष्टिकोण के अनुसार कुछ मूलभूत तथ्य होते हैं जो सभी इतिहासकारों के लिए समान है, दूसरे शब्दों में इतिहास की रीढ हैं। उदाहरणस्वरूप यह तथ्य है कि हेस्टिंग्स की लड़ाई 1066 में लड़ी गई। पहली बात तो यह है कि इतिहासकार मूलतः इस तरह के तथ्यों से नहीं उलझता।[5]

निःसंदेह ऐतिहासिक तथ्य इतिहास की रीढ़ होता है।[6] सर स्टॉक के शब्दों में "तथ्य पवित्र होते हैं, किन्तु विचार स्वतन्त्र है। इतिहास में तथ्य की अपेक्षा उनकी व्याख्या प्रधान होती है।"[7] ई.एच. कार ने लिखा है कि "इतिहासकार तथ्य मछली बेचने वाले की पट्टी पर विभिन्न प्रकार की मछलियों की भांति होते हैं। इतिहासकार अपनी रूची के अनुसार मछली खरीदकर घर ले आता है। अपनी इच्छानुसार उसे पका कर रसास्वादन करता है। इसी प्रकार इतिहासकार द्वारा चयन किया हुआ तथ्य ऐतिहासिक तथ्य होता है।"

इतिहास में दो प्रकार के तथ्य होते हैं, जिसे कठोर तथा कोमल तथ्यों की संज्ञा दी जा सकती है। कठोर तथ्य उसे कहते हैं जिसे इतिहासकार अपने इच्छानुसार नहीं बदल सकता है, जैसे 1526 ई., पानीपत में, बाबर तथा इब्राहिम लोदी, कठोर ऐतिहासिक तथ्य है। इनके चयन में इतिहासकार की इच्छा के लिए स्थान नहीं है और न तो वह अपनी रूचि के अनुसार इन ऐतिहासिक तथ्यों में परिवर्तन कर सकता है।

RRIJM 2015, All Rights Reserved

इतिहास का कोमल तथ्य, इतिहासकार का व्याख्यात्मक वर्णन होता है। बाबर की विजय तथा इब्राहिम लोदी की पराजय के व्याख्यात्मक वर्णन में वह अपनी रूचि के अनुसार तथ्यों को तोड़–मरोड़ कर चित्रण प्रस्तुत कर सकता है। यहां पर ई.एच. कार की उक्ति यथार्थ प्रतीत होती है कि "तथ्य स्वयं नहीं बोलते, बल्कि इतिहासकार अपने इच्छानुसार बुलवाता है। परन्तु यह भी सत्य है कि कठोर तथ्यों को इतिहासकार अपने अच्छानुसार नहीं बुलवा सकता है। केवल कोमल तथ्यों के विषय में ही वह अपने इस अधिकार का प्रयोग कर सकता है।"[8] ई.एच. कार के अनुसार "तथ्य बेरे की तरह होते हैं, जब तक उनमें कुछ भरा न जाए वे खड़े नहीं होते।"[9]

उदाहरण के लिए रूबीकान नामक उस मामूली सी नदी का सीजर द्वारा पार किया जाना एक ऐतिहासिक तथ्य है, जबकि उसके पहले ओर बाद में जिन करोड़ों लोगों ने पार किया, उनमें किसी की कोई दिलचस्पी नहीं है।[10]

समाज और व्यक्ति :

सबसे पहले हमारे दिमाग में प्रश्न उठता है कि समाज या व्यक्ति में से कौन पहले है। यह प्रश्न ऐसा ही है जैसे मुर्गी पहले या अण्डा।[11] समाज और व्यक्ति अविभाज्य हैं, वे एक–दूसरे के लिए आवश्यक तथा पूरक हैं, विरोधी नहीं। डॉन के शब्दों में कोई भी व्यक्ति अपने–आप में अलग–अलग द्वीप जैसा नहीं होता, हर व्यक्ति महाद्वीप का एक अंग होता है। ई. एच. कार के अनुसार इतिहास का अध्ययन करने से पहले उसके ऐतिहासिक तथा सामाजिक परिवेश का अध्ययन करना चाहिए। 'इतिहासकार एक व्यक्ति के रूप में इतिहास तथा समाज का उत्पाद होता है।[12] इतिहासकार इसके पहले कि वह इतिहास लेखन आरमभ करे स्वयं इतिहासका उत्पादक होता है। केवल वर्तमान के प्रकाश में ही अतीत हमारे समझने योग्य बन पाता है और हम अतीत के प्रकाश में ही वर्तमान को पूरी तौर से समझ पाते हैं। अतीत के समाज को मनुष्य के लिए सुबोध बनाना और वर्तमान समाज पर उसकी पकड़ मजबूत करना, इतिहास का दोहरा कर्तव्य है।[13]

इतिहास विज्ञान के रूप में :

इतिहास विज्ञान है या नहीं? यह एक विवादास्पद विषय है। कुछ लोग इतिहास को विज्ञान नहीं मानते हैं। परन्तु ई. एच. कार ने What is Hisoty में यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि इतिहास वास्तव में विज्ञान है। ई.एच. कार ने इतिहास को विज्ञान का नाम न देने के विरूद्ध मुख्य चार आपत्तियों का खण्डन करते हुए इस प्रकार तर्क दिए हें। सर्वप्रथम आरोप यह है कि इतिहास विशिष्ट तथा असाधारण का अध्ययन करता है जबकि विज्ञान विश्वसनीय और सामान्य का। इस मत का आरम्भ अस्तू से कहा जा सकता है, जिसने घोषणा की थी कि काव्य इतिहास की अपेक्षा कहीं अधिक गंभीर और अधिक दार्शनिकतापूर्ण होता है, क्योंकि काव्य का विषय सामान्य सत्य होता है, जबकि इतिहास का विशिष्ट सत्य।[14]

भौतिक विज्ञान के लिए यह बात पूर्ण तथा सत्य है कि कोई दो भूगर्भ पदार्थ, एक ही जाति के कोई दो पशु और कोई दो अणु एकदम समान नहीं होते। इसी तरह कोई दो ऐतिहासिक घटनाएं भी एकदम समान नहीं होती। लेकिन जब भाषा का प्रयोग किया जाता है, तो इतिहासकार को भी वैज्ञानिक की तरह सामान्यीकरण करना पड़ता है।[15]

दूसरी आपत्ति है कि इतिहास हमें कोई सबक नहीं सिखाता। ई.एच. कार ने इसका खण्डन किया है। वे कहते हैं कि प्रत्येक अन्तर्राष्ट्रीय घटना हमें कोई न कोई सीख अवश्य देती है।[16] राष्ट्र संघ ने अपनी असफलता से हमें कुछ सिखाया जिसके परिणामस्वरूप संयुक्त राष्ट्रसंघ की स्थापना करते समय कुछ बातों का विशेष तौर पर ध्यान रखा गया। कार के इतिहास का कार्य है वर्तमान और अतीत के पारस्पिरिक संबंधों के माध्यम से दोनों की और गहरी समझ प्रस्तुत करना।[17]

तीसरी आपत्ति यह है कि इतिहास की पूर्व–कल्पना नहीं की जा सकती। ई.एच. कार महोदय कहते हैं कि इतिहास में की कई भविष्यवाणियां संभावनाएं होती हैं। जो चीजों के घटित होने की हमारी समझ को बढ़ाती हैं और हमारी क्रियाओं का निर्देशन करती हैं। यह सच है कि इतिहासकार की भविष्यवाणी भौतिक विज्ञान की भांति सूक्ष्म नहीं होती।[18] कार महोदय इतिहासकार और भौतिक विज्ञानिक के बीच समानता प्रदर्शित करते हुए कहते हैं कि "कुल मिलाकर यह प्रतिपादित करना चाहता हूँ कि उनके लक्ष्य और पद्धतियां अतः भिन्न नहीं होते।[19]

चौथी आपत्ति आलोचकों की यह है कि विज्ञान के विपरीत इतिहास धर्म और नैतिकता के प्रश्नों से संबंधित होता है। लेकिन कार महोदय इसको स्वीकार नहीं करते। उनकी मान्यता है कि इतिहासकार अपनी समस्याओं का समाधान किसी बाहरी शक्ति पर निर्भर हुए बिना कर सकता है। धर्म और ईश्वर इतिहास के लिए अनिवार्य नहीं है। नैतिकता का संबंध भी इतनी दूर का है। एक बुरा पति अच्छा राजा हो सकता है। यदि उसके बुरे पति होने का प्रभाव इतिहास की घटनाओं पर न पड़े तो इतिहास को उससे कोई सरोकार नहीं रहेगा।[20]

इस प्रकार ई.एच. कार ने यह सिद्ध करने का प्रयास किया है कि इतिहास वास्तव में एक विज्ञान है और किसी भी विज्ञान की तरह गंभीर विषय है।

इतिहास में कार्य–कारण संबंध :

इतिहासकार कथा कहने वाला होता है और प्रत्येक कथा कहने वाला यह जानता है कि कुछ घटनाएं परस्पर विशेष संबंधों के साथ जुड़ी रहती हैं। इस संबंध को कार्यकारण संबंध कहा जाता है। इतिहास में कार्य कारण संबंध का वर्णन करते हुए कारने कहा कि इतिहास में निरन्तर यह पूछा जाता है कि ऐसा क्यों हुआ। महान इतिहासकार या विचारक वही है जो नई चीजों के संदर्भों के बारे में पूछता है कि ऐसा क्यों[21] कोलिंगवुड के अनुसार कारण वह प्रमुख तत्व है जो मनुष्य को कार्य करने के लिए प्रेरित, प्रोत्साहित तथा बाध्य करता है। इतिहासकार मनुष्य को बाध्य करने वाले तत्वों का अध्ययन कारण के रूप में करता है। इन तथ्यों को ध्यान में रखकर ई.एच. कार ने स्पष्ट लिखा है कि इतिहास का अध्ययन कारणों का अध्ययन है। कार का मानना है कि कोई भी ऐतिहासिक घटना किसी एक कारण का परिणाम नहीं

होती। उसके लिए अनेक कारण उत्तरदायी होते हैं और अतीत की घटनाओं को क्रमबद्ध रूप देकर कारण तथा प्रभाव को क्रम से रखना ही इतिहास है।[22]

इतिहास में वस्तुनिष्ठा :

कार के अनुसार इतिहास के तथ्य हमें कभी भी शुद्ध रूप में नहीं मिलते, क्योंकि वे शुद्ध रूप में नहीं होते हैं और न ही रह सकते हैं। वे हमेशा लेखक के मस्तिष्क से प्रभावित होकर आते हैं। डोनाल्ड वी. गेरोन्स्की के कथनानुसार, "वस्तुनिष्ठा का अर्थ बिना व्यक्तिगत पक्षपात या पूर्वाग्रह के ऐतिहासिक तथ्यों का प्रयोग करना है।"[23]

इतिहासकार वर्तमान की आँखों से अतीत को देखता है, लेकिन तथ्य यह है कि इतिहासकार को उस समय पर ध्यान रखना चाहिए जिसका वह वर्णन कर रहा है। इस प्रकार से यह इतिहास लेखन प्रारम्भ करने के लिए इतिहासकार द्वारा अपने आप को हथियारबंद करने का प्रयास है, जो कार के लिए कच्चा माल जुटाने जैसा है और इस स्तर तक इतिहासकार के लिए पूर्व रूप से वस्तुनिष्ठा बने रह सकना संभव है।[24]

आलोचनात्मकता का दूसरा अंतर्आलोचन अथवा आत्म–आलोचन इतिहासकार द्वारा अपनी प्रतिभा, अपनी क्षमता और अपने सामर्थ को तोलता है, अपनी योग्यता को परखता है और अपने कृतित्व पर निगाह रखते हुए अपने कर्तव्य को जानना चाहिए।[25] ई.एच. कार के अनुसार जो इतिहास अन्य की अपेक्षा विश्वसनीय होता है, उसमें वस्तुपरकता के तत्व अधिक होते हैं। इतिहास सभी अर्थ और वस्तुनिष्ठा प्राप्त कर सकता है जब वह अतीत और भविष्य के बीच एक सुस्पष्ट संबंध कायम कर ले।[26]

निष्कर्ष

संक्षेप में कहा जा सकता है कि कार ने इतिहास की परिभाषा, चरित्र व विशेषताओं पर गम्भीरतापूर्ण विचार प्रकट किये हैं। व्यक्ति समाज का अंग है तथा उसको प्रभावित करता है। ई.एच. कार व्यक्ति ओर समाज में अन्तर नहीं मानते। कार के अनुसार कोई भी इतिहासकार पूरी तरह से वस्तुनिष्ठ नहीं हो सकता। किसी इतिहासकार में वस्तुनिष्ठा कम होती है तो किसी में ज्यादा। कार महोदय ने प्रत्येक इतिहासकार को किसी बाहरी दबाव से मुक्त रहकर निष्पक्ष रूप में तथ्यों का आंकलन व विश्लेषण करने पर जोर दिया है। ई.एच. कार ने इतिहास को इतिहास और तथ्यों के बीच संवाद माना जाता है तथा उसको कला और विज्ञान के रूप में देखा है। अर्थात् कार ने इतिहास को विज्ञान माना है। ऐसा उसने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक "What is Hisoty" में सिद्ध किया है।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. डॉ. झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन पृ. 2
2. डॉ. झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, पृ. 4
3. पाण्डे गोबिन्द चन्द्र, इतिहास : स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ. 155
4. डॉ. झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, पृ. 25
5. ई.एच. कार, What is History, पृ. 3
6. डॉ. झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, पृ. 26
7. ई.एच. कार, What is History, पृ. 23
8. डॉ. झारखण्डे चौबे, इतिहास दर्शन, पृ. 23
9. ई.एच. कार, What is History, पृ. 47
10. ई.एच. कार, What is History, पृ. 5
11. ई.एच. कार, What is History, पृ. 23
12. बुद्ध प्रकाश, इतिहास दर्शन, पृ. 323
13. शर्मा राजेन्द्र कुमार, इतिहास स्वरूप अवधारणायें एवं उपयोगिता, पृ. 70
14. ई.एच. कार, What is History, पृ. 51
15. सिन्हा, अतुल कुमार, इतिहास मूल्य और अर्थ, पृ. 19
16. बुद्ध प्रकाश, इतिहास दर्शन, पृ. 326
17. पाण्डे गोबिन्द चन्द्र, इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ. 155
18. ई.एच. कार, What is History, पृ. 56
19. बुद्ध प्रकाश, इतिहास दर्शन, पृ. 328
20. पाण्डे गोबिन्द चन्द्र, इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ. 157
21. ई.एच. कार, What is History, पृ. 76
22. ई.एच. कार, What is History, पृ. 94
23. पांचाल, एच.सी. एवं एच.एस. के बघेला, इतिहास के सिद्धान्त एवं पद्धतियां, पृ. 136
24. सिन्हा, अतुल कुमार, इतिहास मूल्य और अर्थ, पृ. 45
25. ई.एच. कार, What is History, पृ. 5
26. पाण्डे गोबिन्द चन्द्र, इतिहास स्वरूप एवं सिद्धान्त, पृ. 168

RRIJM 2015, All Rights Reserved